**Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies,**
*Online ISSN 2278-8808, SJIF 2019 = 6.380, www.srjis.com*
*PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, NOV-DEC, 2020, VOL- 8/62*

# हिंद महासागर एवं भारतीय सुरक्षा:

**हेमन्त कुमार पाण्डेय[1], Ph. D. & मनोज कुमार मलिक[2]**

*[1]सह- आचार्य, रक्षा अध्ययन विभाग, मेरठ कॉलेज, मेरठ*

*[2]शोध छात्र, रक्षा अध्ययन विभाग, मेरठ कॉलेज, मेरठ*

*Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com*

जो भी देश हिंद महासागर को नियंत्रित करता है वह एशिया पर वर्चस्व स्थापित करेगा। यह महासागर सात समुद्रों की कुंजी है। 21 वी शताब्दी में विश्व का भाग्य निर्धारण इसकी समुद्री सतह पर होगा।

एल्फ्रेड महान

एशिया ,अफ्रीका तथा ऑस्ट्रेलिया तीन महाद्वीपों से घिरा हिंद महासागर उपग्रह छायाचित्रो तथा विश्व मानचित्र पर एक बहुत बड़ी प्राकृतिक झील के रूप में प्रतीत होता हैं। भारतीय सुरक्षा के दृष्टिकोण से हिंद महासागर का युद्धनीतिक महत्व अत्यधिक है। हिंद महासागर के तटीय देशों में भारत का विशिष्ट स्थान है ।पिछले कुछ दशकों में भारत ने आणविक ,अंतरिक्ष संचार ,हाइड्रोग्राफी तथा सैनिक क्षेत्रों में महत्वपूर्ण उपलब्धियां हासिल की है ।भारतीय दक्षिण एशिया का न केवल प्रमुख देश है बल्कि गुटनिरपेक्ष आंदोलन का हिस्सा भी रहा है ।भारत एशिया में शांति एवं सुरक्षा के संघर्ष में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। हिंद महासागर में बढ़ते सैन्यीकरण पर भारत में उचित चिंता व्याप्त हो रही है । इन सैन्यीकरण का भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा पर सीधा प्रभाव पड़ता है। हिंद महासागर का जल भारत को तीन दिशाओं से छूता है ।इसके शांत स्थिर बने रहने से ही भारत की समुद्री सीमा सुरक्षित है। भारत की सीमाएं हिंद महासागर में सैकड़ों मील दूर तक है उसमें स्थित सैकड़ों द्वीपो की सुरक्षा इसके शांत बने रहने पर ही निर्भर करती है ।हिंद महासागर में बड़ी शक्तियों की आपसी प्रतिस्पर्धा से सर्वाधिक खतरा भारत को ही है। भारत की सुरक्षा हिंद महासागर पर पूर्ण रूप से निर्भर करती है। कुछ महाशक्तिया हमारे द्वीपों पर कब्जा करने की योजना बना रही है।

ताइवान ,सिंगापुर और थाईलैंड के जहाज हमारी समुद्री क्षेत्र में घुसकर मछलियां मार कर ले जाते हैं ।कुछ वर्षों पहले ताइवान के करीब 103 जहाजी कर्मचारी और 6 पोतो पर भारतीय नौसेना ने कब्जा कर लिया था क्योंकि वह अवैध रूप से भारतीय समुद्री सीमा में घुसे थे ।26 नवंबर 2008 की मुंबई की आतंकवादी घटना ने पूरे देश को हिला दिया था ।पाक आतंकवादी समुद्र रास्ते से मुंबई आए थे । 1993

*Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies*

के मुंबई धमाके के समय भी आतंकवादियों ने समुद्री मार्ग का उपयोग विस्फोटक पदार्थों को ले जाने के लिए किया था ।भारत सरकार ने 2008 की घटना के पश्चात खुले समुद्री तटों की सुरक्षा को गंभीरता से लिया तथा स्पष्ट रूप से कहा कि तटीय क्षेत्र की सुरक्षा की जिम्मेदारी भारतीय तटरक्षक की है ।संपूर्ण सामुद्रिक सुरक्षा के लिए भारतीय नौसेना उत्तरदायी है ।हिंद महासागर में बड़ी शक्तियों की प्रतिद्वंद्विता दृष्टिगोचर होती है। यह प्रतिद्वंद्विता सैद्धांतिक एवं राजनीतिक कारणों के अतिरिक्त इस क्षेत्र के देशों पर अपना वर्चस्व स्थापित करने तथा अपने हितों को सुरक्षित करने की ही है ।इन शक्तियों ने विसैन्यकरण की बात को ताक पर रख दिया है। भारत की सुरक्षा को प्रभावित करने वाले हिंद महासागर में स्थित कुछ कारक निम्न है-

**बंगाल की खाड़ी:-**

अंडमान निकोबार द्वीप समूह जो कि भारत का ही हिस्सा है हिंद महासागर में ही स्थित है। बंगाल की खाड़ी विश्व की सबसे बड़ी खाड़ी है। यह हिंद महासागर के उत्तर पूर्वी भाग में हैं। इसका नाम भारतीय राज्य पश्चिम बंगाल के नाम पर है ।भारत के लिए बंगाल की खाड़ी सामरिक दृष्टि से अति महत्वपूर्ण है ,क्योंकि उसका प्रभाव क्षेत्र खाड़ी के प्राकृतिक विस्तार में ही आता है ।अंडमान व निकोबार द्वीप समूह इसी खाड़ी द्वारा भारत से जुड़ा है ।भारत के कई प्रमुख बंदरगाह जैसे कोलकाता, चेन्नई, विशाखापट्टनम और तूतीकोरिन बंगाल की खाड़ी में ही स्थित है।

**डियागो गार्सिया:-**

डिएगो गार्सिया चागोस द्वीप समूह का एक हिस्सा है ।हिंद महासागर के बीचो-बीच स्थित डिएगो गार्सिया द्वीप का रणनीतिक महत्व इसलिए है क्योंकि यह दीप अपनी भौगोलिक स्थिति व चक्रवातीय क्षेत्र से बाहर है ।विदित हो कि अमेरिका ने डियागो गार्सिया स्थित अपने सैन्य बेडो का इस्तेमाल इराक व अफगानिस्तान के युद्ध में बहुतायत से किया था। भारत के लिए डिएगो गार्सिया में अमेरिकी फौजों की मौजूदगी तब सिरदर्द बनी जब भारत-पाक युद्ध 1971 के दौरान दुनिया में शीत युद्ध का माहौल बना हुआ था उस दौर में अमेरिका अपने हितों के मद्देनजर खुलकर पाकिस्तान के समर्थन में आ गया था ।इसी दौर में हमारे देश के रणनीतिकारों मे यह राय बनी थी कि डिएगो गार्सिया में अमेरिकी सैन्य बेडो की उपस्थिति भारत के लिए भारी खतरा है ।डिएगो गार्सिया भारत से लगभग 1200 नॉटिकल की दूरी पर है । हिंद महासागर के केंद्र में स्थित होने की वजह से यहा से आसपास के संपूर्ण क्षेत्र में वायु देखभाल सरलता से की जा सकती है।

*Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies*

**ग्वादर बंदरगाह :-**

ग्वादर बंदरगाह पाकिस्तान के बलूचिस्तान प्रांत में स्थित बंदरगाह है। यह भारत से लगभग 460 किलोमीटर दूरी पर स्थित है । ग्वादर बंदरगाह को पाकिस्तान द्वारा चीन की ओवसीज होल्डिंग्स लिo कंपनी के नियंत्रण में दे दिया है। यह भारत की सुरक्षा के मद्देनजर चिंता का विषय है क्योंकि इस पोर्ट से भारत पर निगरानी रखना काफी आसान है ।दरअसल चीन भारत की समुद्र में तीनों तरफ से घेरने की रणनीति बना रहा है ग्वादर पोर्ट पर चीनी नियंत्रण होने से पोर्ट रक्षा और सुरक्षा के लिए चीनी नौसेना अब इसे इस्तेमाल करेगी ।युद्ध की स्थिति में ग्वादर पोर्ट भारत के लिए मुसीबत खड़ी कर सकता है।

हिंद महासागर क्षेत्र में बाहरी शक्तियों की बढ़ती नौसैनिक उपस्थिति एवं गतिविधियों का भारतीय नौसेना के और अधिक विकास एवं विस्तार की आवश्यकता है ।चीन भी बंगाल की खाड़ी क्षेत्र में अपनी नौसैनिक गतिविधियां तेजी से बढ़ा रहा है। चीन अपनी नौसेना का बड़े पैमाने पर आधुनिकरण एवम् विस्तार कार्य में लगा हुआ है ।अरब सागर में अमेरिका तथा उसके मित्र देशों की नौसेनिक गतिविधियां दिन पर दिन बढ़ती जा रही है ।पाकिस्तान भी अपने नौसेनिक बंदरगाह को और अधिक शक्तिशाली बनाने में लगा हुआ है ।इस कार्य में चीन और अमेरिका उसकी मदद कर रहे है।भविष्य में भारतीय राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए नोसैना की महत्वपूर्ण भूमिका होगी।

**समुद्री डकैती:**

अरब सागर के क्षेत्र में सोमालियाई लुटेरों से भारतीय व्यापारिक जहाजों को सदैव खतरा बना रहता है । कोलाराडो स्थित "वन अर्थ फाउंडेशन " की रिपोर्ट के अनुसार समुद्री डकैती की वजह से दुनिया भर के देशों को प्रतिवर्ष 7 से 12 अरब डालर का व्यय करना पड़ता है ।इसमें उन्हें दी जाने वाली फिरौती, जहाजों का रास्ता बदलने में हुआ खर्च,समुद्री लुटेरों से लड़ने मैं कई देशों की तरफ से नौसेना की तैनाती और कई संगठनों के बजट इस अतिरिक्त व्यय में शामिल है।

**संगठित अपराध:**

समुद्री रास्तो से अवैध हथियारों, नशीले पदार्थों और मानव तस्करी संगठित अपराध के रूप में एक बड़ी सामुद्रिक सुरक्षा चुनौती है।वर्ल्ड ड्रग रिपोर्ट 2020 के अनुसार वैश्विक महामारी कोविड-19 के दौरान भी मादक पदार्थों की तस्करी अनवरत रूप से जारी रही। लोकडाउन के कारण स्थलीय मार्गों का आवागमन प्रतिबंधित था परंतु मादक पदार्थों व मानव तस्करी समुद्री मार्गो के द्वारा की गई थी।

*Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies*

**स्वतंत्र नोवहन में बाधा:**

चीन द्वारा भारतीय सीमा के समीप विकसित किए जा रहे बंदरगाहो ने तनाव की स्थिति उत्पन्न कर दी है, जिसके कारण भारत के लिए भविष्य में स्वतंत्र नौवहन चुनौतीपूर्ण हो सकता है। चीन द्वारा भारत के चारों ओर इस प्रकार बंदरगाहों का विकास उसकी स्ट्रिंग ऑफ पर्ल्स की नीति को दर्शाता है। स्ट्रिंग ऑफ पर्ल्स हिंद महासागर क्षेत्र में संभावित चीनी इरादे से संबंधित एक भू राजनैतिक सिद्धांत है ।यह चीन की मुख्य भूमि से सुडान पोर्ट तक फैला है। वर्ष 2017 में चीन ने जिबूती में अपनी पहली विदेशी सैन्य सुविधा शुरू की और वह अपने महत्वाकांक्षी बेल्ट एंड रोड इनीशिएटिव के हिस्से के रूप में म्यांमार,बांग्लादेश,श्रीलंका और अफ्रीका के पूर्वी तट, तंजानिया और केन्या मे बुनियादी ढांचे में भी भारी निवेश कर रहा है। इस प्रकार की चीन की गतिविधियां भारत को चारों ओर से घेरने को दर्शाती है ,जिसे स्ट्रिंग ऑफ पर्ल्स कहा जाता है।

अतः यह कहा जा सकता है कि आज भी हिंद महासागर पहले की ही भांति भारतीय सुरक्षा एवं विकास का एक प्रमुख आधार है। इस क्षेत्र में भारतीय इतिहास,भौगोलिक स्थिति व चुनौतियों को देखते हुए यह आवश्यक है कि भारतीय नौसेना अपनी क्षेत्रीय श्रेष्ठता बनाए रखें तथा इस प्रकार से अपना विकास करें कि किसी भी संकट के समय दूर गहरे समुद्रों में जाकर स्वतंत्र रूप से कार्य कर सकें।भारतीय सरकार की नौसैनिक नीतियां एवं स्रातिजिक योजनाएं इस दिशा में अग्रसर है।हिंद महासागर तटीय देशों में भारतीय नौसेना ही स्रातिजिक भूमिका अदा कर सकने की क्षमता रखती है। एशिया में भारत की स्त्रातिजिक भूमिका व प्रभाव का 21वीं सदी में तेजी से विस्तार हो रहा है ।सामुद्रिक हितो की सुरक्षा हेतु सशक्त नौसेना का होना आवश्यक है भारतीय नौसेना का होना आवश्यक है। भारतीय नौसेना का पिछला इतिहास गौरवपूर्ण रहा है। आगे भविष्य में भी यह देश की सुरक्षा एवं गौरव का अटल प्रतीक बनी रहेगी।

**संदर्भ ग्रंथ सूची**

*डॉ॰ हरीशरण-हिंद महासागर, चंद्र प्रकाश एंड कम्पनी हापुड,2004 पृ॰ सं॰ 113- 114*
*टाइम्स ऑफ इंडिया,नई दिल्ली 2003 पृ॰ सं॰ 144*
*हिंदुस्तान टाइम्स,मुंबई,अक्टूबर 10, 2010*
*डॉ॰ हरीशशरण एवं डॉ हर्ष॰ कुमार सिन्हा -हिंद महासागर चुनौतियां एवं विकल्प प्रत्यूष पब्लिकेशंस दिल्ली- 2012*
*जे॰ एम॰ श्रीवास्तव - राष्ट्रीय सुरक्षा, चंद्र प्रकाश एंड ब्रदर्स हापुड।*
*कुमार एवं जायसवाल: 21 वी सदी में भारत की सुरक्षा चुनौतियां महावीर पब्लिकेशन,नई दिल्ली 2000 ।*
*डॉ॰ अशोक कुमार सिंह,एच॰ई॰ एस॰, राष्ट्रीय सुरक्षा, प्रकाश बुक डिपो,बरेली 2010 ।*
*डॉ॰ ओमप्रकाश तिवारी,राष्ट्रीय सुरक्षा ज्ञानदा प्रकाशन 24 दरयागंज अंसारी रोड नई दिल्ली,2003 ।*

*Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies*